International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

प्राचीन भारतीय विकल्प के रूप में शुक्र के राजनीति चिन्तन की अवधारणाऐं:

Dr. Anjana Srivastava , Lecturer – Political Science. SCRS.GOVT. P.G. College,Sawai Madhopur, **anjanasrivastava67@gmail.com**

सारांश

भारतीय राजनैतिक चिन्तन को पश्चिम में गलत समझने की एक परम्परा रही है। पश्चिम के विद्वान काफी समय तक प्राचीन भारत में राजनैतिक दर्शन के होने की बात को ही स्वीकार नहीं कर पाते थे। भारत में बौद्धिकता की मौलिक सोच की दिशा धर्म की ओर थी, प्राचीन यूनान की तरह तार्किकता, वैज्ञानिकता के आधार पर स्वतन्त्र रूप से राजनीति पर विचार करने की नहीं रही। इस प्रकार की पाश्चात्य सोच ने भारतीय बौद्धिक वातावरण को विषाक्त किया है। प्राचीन भारतीय राजनैतिक दर्शन के प्रति सामान्य मानसिकता डॉ. बी.पी. श्रीवास्तव के शब्दों में 'ऊंह' की रही है[4], (अर्थात् इसमें है क्या)।

की वर्डस–राजनैतिक दर्शन, बौद्धिक, पाश्चात्य, ऊंह।

1921 में ए.बी. कीथ, एन.एन. लॉ की पुस्तक के प्राक्कथन में कीथ कहते हैं कि राजनीति के गम्भीर सिद्धान्त की दिशा में भारत के पास देने को कुछ भी नहीं है।[2] कीथ के इस मत पर ए.डी. पन्त[3] महान् आश्चर्य प्रकट करते हैं कि कीथ, कौटिल्य के अर्थशास्त्र के प्रकाशन के 21 वर्ष बाद भी इस भ्रामक सोच से ग्रस्त रहे हैं। प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिन्तन के अध्ययन की दिशा में प्रारम्भिक प्रयत्न एन.एन. ला[5], बी.के. सरकार[6] तथा के.पी. जायसवाल[7] तथा यू.एन. घोषाल ने किया। परन्तु इनका प्रयत्न यह दिखाने का रहा है कि प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिन्तन में भी पश्चिम की तरह ऐसी अवधारणाएं है जैसे गणतन्त्रीय व्यवस्था, स्वतन्त्रता सम्प्रभुता आदि, इस प्रयत्न में 'पश्चिम की तरह यहाँ भी' पर आग्रह था। यह प्रयत्न एक प्रकार से भारतीय चिन्तन के प्रति 'ध्यानाकर्षण' प्रयत्न कहा जा सकता है। परन्तु यह

उपागम ठीक नहीं था। वी.पी. वर्मा तथा ए.डी. पन्त[8] ने सही कहा है कि पश्चिम की कैटेगिरी को यहाँ के राजनीतिक चिन्तन में देखना गलत है। इससे यहाँ के चिन्तन की सही समझ सम्भव नहीं हो सकती है।

अवधारणात्मकता

भारतीय चिन्तन म□निहित विचारा□का अध्ययन स्वतन्त्र रूप से ही होना चाहिए, ऐसी समझ अवधारणात्मक अध्ययन से ही संभव है। अभी तक भारतीय राजनीतिक चिन्तन में अवधारणात्मक अध्ययन को बहुत अधिक नहीं अपनाया गया है। भारतीय संदर्भ में अवधारणात्मक अध्ययन की अपनी एक अनिवार्यता है। दार्शनिक दृष्टि से अवधारणात्मक अध्ययन यथार्थ को सार्वभौम से, राजनीति को शाश्वत से जोड़ता है तथा एक वृहत तथा वैश्विक व्यवस्था के परिप्रेक्ष्य में व्यक्तिगत तथा संस्थागत व्यवहार को सुनिश्चित व मूल्यांकन करता है। आजकल अवधारणा निर्माण और पैराडाइम की बात का प्रचलन है। वास्तविकता यह है कि अध्ययन के फलस्वरूप विचारों का तार्किक संयोजन तथा स्वरूप का किसी वृहत दार्शनिक परिपेक्ष्य में निर्धारण अवधारणा बना देता है। यह एक दार्शनिक प्रक्रिया है। पश्चिम में दार्शनिक अध्ययन का एक पैराडाइम है जो मानव, राज्य और व्यवस्था से बना है। इससे भिन्न भारतीय दर्शन का पैराडाइम आध्यमिकता, (नैतिकता व मोक्ष) मानव समाज व राज्य से बना है। अतः पैराडाइम व निर्माणक तत्वों के क्रम परिवर्तन से अवधारणा की प्रकृति व स्वरूप भी बदल जाता है। इस संदर्भ में प्राचीन भारतीय चिन्तन का अध्ययन करने पर अवधारणाओं का जो उभार आता है वह विषय–वस्तु विस्तार तथा कलेवर की दृष्टि से पश्चिम का प्रारूप नहीं होता है। भारतीय चिन्तन में अवधारणा की तीन विशेषताए□देखी जा सकती है।

1. Theocentric Humanism
2. Anthropocentric Humanism
3. Spiritualcentric Humanism

एक बात का स्पष्टीकरण करना अति आवश्यक है कि जब शुक्र के विचारों के अवधाराणात्मक अध्ययन की बात की जाती है तो इससे यह नहीं समझना चाहिए कि शुक्र स्वयं ऐसी अवधारणाओं के स्वरूप के प्रति सजग व जागरूक थे। शुक्र ने स्वयं अवधारणा को प्रस्तुत नहीं किया है। उनकी रचना में अवधारणा के तत्व विद्यमान रहे हो। इन तात्विक विचारों को अवधारणात्मक रूप देने का प्रयत्न किया गया

है। यही अवधारणा का तात्विक अर्थ है। अब अवधारणात्मक अध्ययन प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिन्तन के मूल प्रकृति के अनुकूल है और उसकी यह सही समझ का सही माध्यम है। ए.डी. पन्त[9] के अनुसार भारतीय दार्शनिक चिन्तन का परिप्रेक्ष्य समस्त ब्रह्माण्ड का एक सुनिश्चित व्यवस्था होना है जिसको मानवीय समाज को प्रतिम्बित करना चाहिए। यही कारण है कि वी.पी. वर्मा[10] ने हिन्दू राजनीतिक विचारों का अध्ययन हिन्दू दार्शनिक तात्विक आधार पर Metaphysical Foundation प्रदान किया। उनकी यह कृति अवधारणात्मक अध्ययन है जिसके लिए यही उपयुक्त आधार था।

प्राचीन भारतीय राजनीतिक विचारों का अध्ययन मूल रूप से अवधारणात्मक होना चाहिए क्योंकि इसके अन्तर्गत विचारों का अध्ययन दार्शनिक परिप्रेक्ष्य में नीतिगत आधार पर किन्हीं मूल्यों की प्राप्ति के लिए सम्भव होता है।

यहां हमने शुक्र के राजनैतिक विचारों के कतिपय अवधारणाओं (राज्य, लोक कल्याण तथा वैधता) का अध्ययन भारतीय विकल्प के रूप में किया है। भारतीय विकल्प के भाव का स्पष्टीकरण आवश्यक है। भाव यह है कि राज्य लोक कल्याण तथा वैधता भारतीय चिन्तन में क्या है, क्यों है, कैसे है? इससे यह बात स्पष्ट होती है कि पश्चिम में राज्य, लोक कल्याण और वैधता परिकल्पनात्मक दृष्टि से 'यह' है तथा यहाँ परिकल्पनात्मक दृष्टि से 'यह' है। इस प्रकार का अध्ययन, अध्ययन को 'पश्चिम की तरह से यह है' की ओर ले जाता है।

यहाँ यह स्पष्ट करना भी आवश्यक है कि अध्ययन के लिए "शुक्र ही क्यों" तथा राज्य, लोक कल्याण तथा वैधता की अवधारणाऐं ही क्यों?

शुक्र ही क्यों

प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिन्तन के स्रोत धर्मशास्त्र की परम्परा तथा अर्थशास्त्र की परम्परा रही है। धर्मशास्त्र के अन्तर्गत स्मृति ग्रन्थ, आरण्यक आते हो जिसकी विवेचना की गई है।[11] यह मानव जीवन के सम्बन्ध में सम्पूर्ण आचार–संहिता है जिसके अन्तर्गत जीवन दर्शन, जीवन लक्ष्य सभी प्रकार के मानवीय संगठन से संबंधित आचार की वृहत विवेचना है। अर्थशास्त्र अथवा नीतिशास्त्र इसके अन्तर्गत आते है। नीतिशास्त्र अथवा अर्थशास्त्र मानव जीवन के उस संगठन से संबंधित है जिसका उत्तरदायित्व शान्ति स्थापना करना, सुरक्षा प्रदान करना है। जीवन को उत्कृष्ट लक्ष्यों तक पहुंचने के लिए, आवश्यक दशाओं को प्रदान करना है। सेलीटोर[12] ने यह दिखाने का प्रयत्न किया है कि धर्मशास्त्र व नीतिशास्त्र के संबंध में तीन प्रकार की विचारधाराऐं हैं। प्रथम विचारधारा के अनुसार नीतिशास्त्र की परम्परा, धर्मशास्त्र की

परम्परा से निकली हुई है।[13] दूसरी विचारधारा के अनुसार दोनों परम्पराओं का विकास समानान्तर हुआ है। तीसरी विचारधारा के अनुसार नीतिशास्त्र और धर्मशास्त्र एक दूसरे के विरोधी है। सेलीटोर, काणे के मत से सहमति प्रकट करते हुए इस बात का आग्रह करते हैं कि दोनों के संबंध में सही दृष्टिकोण यही है कि नीतिशास्त्र, धर्मशास्त्र से निकली एक शाखा है। इससे राजनीतिक चिन्तन की व्याख्या के संदर्भ में तीन बातें सामने आती है। (क) नीतिशास्त्र का धर्मशास्त्र परिप्रेक्ष्य है, (ख) नीतिशास्त्र के लिए धर्मशास्त्र नीति निर्धारण करता है, (ग) नीतिशास्त्र की भूमिका धर्मशास्त्रीय निर्देशित मूल्यों व नीतियों की क्रियान्विति के लिए है।

नीतिशास्त्र अथवा अर्थशास्त्र के महत्व की दृष्टि से ऐसा भी हुआ है कि नीतिशास्त्र को एक स्वतन्त्र शास्त्र माने जाने का पक्ष प्रस्तुत किया गया है। बहुत से लोग कौटिल्य के अर्थशास्त्र को विशुद्ध राजनीति ग्रन्थ मानकर राजनीति के संबंध में स्वतन्त्र ग्रन्थ की संज्ञा देते हो।

उपर्युक्त परिपेक्ष्य में मनु, शुक्र व कौटिल्य को देखने की आवश्यकता है। एक छोर पर मनुस्मृति मूलतः धर्मशास्त्री मान्य है। उसका नाम ही स्मृति है अर्थात् धर्मशास्त्र से संबंधित व्याख्याऐं हैं। इसमें इसका नीतिशास्त्रीय अंग अथवा अंश है परन्तु गौण है। दूसरे छोर पर कौटिल्य का अर्थशास्त्र है जो मूलतः अर्थशास्त्रीय ग्रन्थ है। उसका नाम ही अर्थशास्त्र है। भले ही धर्मशास्त्र के अंश इसमें प्राक्कथन के रूप में मौजूद हैं। इन दोनों के बीच शुक्र का नीतिशास्त्र आता है। इसमें धर्मशास्त्रीय नीतियों की खुलकर व्याख्या की गई है। इसी प्रकार इसमें अर्थशास्त्रीय बातें भी साग्रह निश्चितता के साथ व्याख्यित की गई है। यह सन्तुलन शुक्रनीतिसार को एक अपना विशेष महत्व प्रदान करता है। बेनीप्रसाद इसलिए शुक्रनीतिसार को इस परम्परा में सबसे महत्वपूर्ण ग्रन्थ घोषित करते हैं।[14]

शुक्रनीतिसार का रचनाकाल विवादित है। रचनाकाल को लेकर विवाद का विषय इतिहासकारों का है। प्रस्तुत शोध की दृष्टि से शुक्रनीतिसार में गर्भित विचार ही महत्वपूर्ण है तथा रचनाकाल का विवाद नहीं है। ये कब लिखे गए और इसके रचयिता कौन थे, इससे उन विचारों के महत्व पर कोई असर नहीं पड़ता है। यदि शुक्र का उल्लेख महाभारत में है, कौटिल्य के अर्थशास्त्र में है या इसकी रचना को कौटिल्य के बाद दिखाया गया है, शुक्र की एक परम्परा हो सकती है जिसका प्रारम्भ व्यास से होता है तथा जो कौटिल्य के अर्थशास्त्र के बाद भी देखने को मिलता है। इस दृष्टि से शुक्रनीतिसार शुक्रीय वैचारिक परम्परा को अपने में समाहित करने वाला एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। अतः शुक्रनीतिसार में रचनाकाल के विवादों में न पड़कर उनके विचारों का अध्ययन प्लेमेनेटज[15] के उपागम के अनुसार किया जा सकता है और ऐसा ही किया गया है।

चयन का आधार

शुक्र के विचारों में राज्य, लोककल्याण, वैधता रूपी अवधारणाओं के चयन के पीछे 'औचित्य की बात' को देखा जा सकता है। राज्य, राजनीतिक दर्शन और राजनीति की शाश्वत अवधारणा है अतः शुक्र के राजनीतिक चिन्तन की व्याख्या में उसका होना तार्किक बाध्यता है। लोक कल्याण को अवधारणा के रूप में देखने का इतिहास प्रथम विश्व युद्ध के बाद से प्रारम्भ होता है। 1917 की रूसी क्रान्ति ने उदारवादी राज्य को एक वगध्य राज्य के रूप में, वगध्य हित के लिए जनकल्याण विरोधी संस्था घोषित कर दिया। उदारवादी राज्य ने इस चुनौती का सामना अपने को लोककल्याण घोषित करके किया। यह उदारवादी राज्य का साम्यवादी आरोप का उत्तर था – अर्थात् वर्गहित नहीं वरन् जनहित राज्य का उद्देश्य है। अतः लोककल्याण एक आधुनिक अवधारणा है। इस आधुनिक अवधारणा को शुक्र के चिन्तन में भारतीय विकल्प देखने के लिए इसका चयन किया गया है।

वैधता की अवधारणा द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद शक्ति, सत्ता और वैधता त्रयी के अंग के रूप में राजनीति शास्त्रियों के आकर्षण का केन्द्र बना। जहाँ शक्ति की अवधारणा का अध्ययन द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद आकर्षण का केन्द्र बिन्दु बना, वहीं सत्ता और वैधता के अध्ययन की अनिवार्यता सामने आयी। इस दृष्टि से अध्ययनार्थ इसका महत्व अति आधुनिक है। परन्तु इस आधुनिक अवधारणा का प्राचीन विकल्प शुक्र के विचारों में देखने का प्रयत्न किया गया है। राज्य से वैधता तक राजनीतिक सिद्धान्त की यह तीन अवधारणाऐं ऐतिहासिक क्रम में तीन वैचारिक कालों का प्रतिनिधित्व करती हैं।

सन्दर्भः–

	Barker Ernest	"Greek Political Thorev Plato and His Predecessors **Published 1960 by Methuen Publishing Ltd"**
2	**Keith , A.V.**	**"'Religion and philosophy of the Veda and Upanishads" printed in 1925,haward university**
3	Panth, A.D.	"Introduction to the Beni Prasad" **Book- theory of government in ancient india**
4	श्रीवास्तव, बी.पी.	"प्राचीन भारतीय राजनीतिक दर्शन, दशा, दुर्दशा तथा स्थिति", प्राचीन भारतीय व्यवस्था (संकलित) में, राजनीति विज्ञान विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर–1978

5	Law N.N.	**"Aspects of Ancient Indian Polity Clarendon" Press,1921**
6	**Sarkar B.K.**	**" The political institution"**
7	**Jayaswal K.P**	**"Hindu polity" butterworth & company, 1924**
8	**Panth A.D.-**	**" Intoduction to the Beni Prasad" book theory of government in ancient india page-16**
9	**Panth A.D.-**	**"Introduction to the Beni Prasad" book theory of government in ancient india {page16}**
10	Verma V.P.-	"studies hindu political thought and its metaphysical foundation , Delhi-1974
11	Kane K.P.	"History of dhramshastra" oriental research institude, pune-1930
12	Saletore B.A.	" Ancient Indian political thought and institutions" Asia, publishing press,Bombay-196 [page 16-23
13	Law N.N.	"Aspects of Ancient Indian Polity "Clarendon Press,1921
14	Beniprasad	" The state in ancient india" india press, Allahbad-1928
15	J. Plamenatz	"Man and society" Londen-1963 Part -II i`- XI